



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-

कृष्ण कुमार निर्माण

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - कृष्ण कुमार निर्माण

एक अदद खिलौना-
हर कोई गुलाम



एक अदद खिलौना--हर कोई गुलाम

खिलौनों पर रीझना एक अलग बात है और खिलौने को ही अपनी जान बना लेना दूसरी बात है। खिलौना मेरे लिए है और खिलौने के लिए मैं हूँ, इन दोनों बातों में बड़ा अंतर है। और हैरत है कि पूरी दुनिया को इसके बीच का अंतर समझ नहीं आ रहा? कैसा वक्त आ गया है? इस संदर्भ में कम से कम हमारे देश के लोगों को तो समझ नहीं आ रहा कि आखिर हम सब खिलौने के इतने गुलाम क्योंकर होते जा रहे हैं? जहाँ तक बात भारत की है तो भारतीय लोगों को भी नहीं समझ आ रहा है कि आखिर कैसे एक खिलौने के गुलाम होते जा रहे हैं? गजब की बात यह है कि जो पीढ़ी आने वाले कल का ख्याल करेगी, जिसके कंधों पर भविष्य की सभी जिम्मेदारियाँ होंगी, उनकी स्थिति तो और भी अधिक भयावह है। आप देखिए ना! हर छात्र के हाथ में वह खिलौना है। हर छोटे बच्चे के हाथ में है। हर बुजुर्ग के हाथ में वही खिलौना है। अब तो कामकाजी तो कामकाजी, घरेलू महिलाएं इस खिलौने की गिरफ्त में आ चुकी हैं। ऐसा होते-होते हुआ यों कि यही खिलौना हमारी जान बन गया। हमारी जिंदगी बन गया। हमारी सांस बन गया। कोई भी व्यक्ति इस खिलौने के बिना नहीं रह सकता जबकि खाने के बिना रह सकता है। नहाने के बिना रह सकता है। पैसे के बिना भी थोड़ा रह सकता है।

और तो और सांस लिए बगैर भी रह सकता है मगर मात्र दो मिनट के लिए वही खिलौना गुम हो जाए तो ऐसे लगता है कि जैसे भूचाल आ गया हो, पूरी दुनिया खत्म हो गई हो, सब कुछ समाप्त हो गया हो। दिल की धड़कन इतनी बढ़ जाती है कि ब्लड प्रेशर मापने वाली मशीन का सारा गणित गड़बड़ा जाता है। और यदि उसी वक्त वही गुम हुआ खिलौना मिल जाए, तो फिर किसी दवाई की जरूरत नहीं होती। आज का मानव कितना गुलाम हो गया इस खिलौने का? शायद इसकी कल्पना भी नहीं की गई होगी और यकीन मानिए यह स्थिति बहुत ही खतरनाक है। इतनी खतरनाक है कि यदि समय रहते हम सब नहीं संभले तो फिर यकीन मानिए आज के बच्चे कल को बिना मस्तिष्क के होंगे, किसी को भी नींद नहीं आएगी, अवसाद इतना हो जाएगा कि किसी को कुछ भी समझ नहीं आएगा?

अगर हम गौर से देखें तो पता चलेगा कि खेत हो, खलिहान हो, स्कूल हो, घर हो, कार्यालय हो सब जगह सभी केवल उसी खिलौने में घुसे हैं। यहाँ तक कि किसी के घर संवेदनाएं व्यक्त करने गए हैं, तब भी उसी खिलौने में व्यस्त हैं।

बस में यात्रा कर रहे हों,रेल का सफर हो या जहाज की यात्रा हो,हर कोई इसी खिलौने में व्यस्त है।पार्क में टहलने गए हों,टहलना छोड़,खिलौने से खेल रहे हैं।सिनेमा हॉल में मूवी देख रहे हैं पर उंगलियाँ उसी खिलौने पर चल रही हैं।गजब तो तब हो जाता है कि बाइक/कार चला रहे हैं और उसी खिलौने में इतने व्यस्त हैं कि हमें पता नहीं चल रहा कि आस-पास से कौन गुजर रहा है?और कब,क्या हादसा घटित हो रहा है?इससे भी बड़ी हैरानी यह है कि यंगस्टर बच्चे/बच्चियाँ तो पैदल चलते हुए भी इसी खिलौने में इतना मस्त हैं कि टक्कर तक हो जाती है और फिर उनके मुँह से केवल एक शब्द निकलता है--सॉरी।लेकिन गजब है कि सुधार फिर भी नहीं आता।आप यकीन मानिए या न मानिए मगर यह सत्य है कि इसी खिलौने की आदत से देश की अस्सी फीसदी से ज्यादा लोग बीमार हो चुके हैं।और यह बीमारी नींद की है,आँखों की है,नजर की है,दिल की है,अवसाद की है,घृणा की है और पता नहीं क्या-क्या?क्या हम उस खिलौने का नाम नहीं जानना चाहेंगे--जी वह खिलौना है--मोबाइल,जिसे हमने अपना मालिक बना लिया है और हम बन चुके हैं नौकर।खुदा खैर करे।

- कृष्ण कुमार निर्माण



लेखक परिचय

नाम – कृष्ण कुमार निर्माण

निवास – करनाल, हरियाणा





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**कृष्ण कुमार निर्माण**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

